उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांकः 37 /एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 12–04–2024

दिनांक	:	12 अप्रैल, 2024
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की द्वितीय बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की प्रथम बैठक डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 12 अप्रैल, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक; गन्ना विभाग; उद्यान विभाग; पशुपालन विभाग; मत्स्य विभाग; कृषि विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक एवं रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन व दलहन वैज्ञानिक तथा नैनी एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट, शुआट्स, प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

प्रथम सप्ताह (12 अप्रैल से 18 अप्रैल, 2024) का मौसम पूर्वानुमान

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार प्रथम सप्ताह के आरंभिक चरण (12 से 15 अप्रैल, 2024) के दौरान प्रदेश के उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य कृषि जलवायु अंचलों में तड़ित झंझावात वज्रपात एवं तेज झोकेंदार हवा (30 से 50 कि.मी./घंटा) के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है। इस दौरान 14 अप्रैल, 2024 को प्रदेश के भांवर तराई क्षेत्र, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, दक्षिणी पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र एवं बुंदेलखण्ड कृषि जलवायु अंचलों में कहीं–कहीं ओलावृष्टि की भी संभावना है तदुपरांत 16 अप्रैल, 2024 से प्रदेश का मौसम शुष्क हो जाने एवं 25 से 35 कि.मी./घंटा की गति से तेज हवायें चलने की संभावना है।

प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग तथा बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से 2–4 डिग्री कम; भावर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग, उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र का अधिकांश भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र का उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस–पास जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलो में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम रहने की संभावना है।

प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 30–32 डिग्री सेल्सियस, भावर तराई क्षेत्र के मध्य भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 32–34 डिग्री सेल्सियस भांवर तराई क्षेत्र का पूर्वी भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग, दक्षिणी–पश्चिमी अर्ध शुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं बुंदेलखंड क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 34–36 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 36–38 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह (19 अप्रैल से 25 अप्रैल, 2024) का मौसम दृष्टिकोण

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम दृष्टिकोण के अनुसार द्वितीय सप्ताह (19 अप्रैल से 25 अप्रैल, 2024) के दौरान पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कहीं–कहीं हल्की वर्षा होने की संभावना है जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में कोई प्रभावी वर्षा होने की संभावना नहीं है।

भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से अत्यधिक 4–6 डिग्री सेल्सियस कम तथा भावर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग,

उत्तर–पूर्वी मैदानी के अधिकांश भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस–पास जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से 2–4 डिग्री सेल्सियस कम रहने की संभावना है।

प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 28–30 डिग्री सेल्सियस; भावर तराई क्षेत्र के मध्य भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 30–32 डिग्री सेल्सियस; पश्चिमी मैदानी के दक्षिणी भाग एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 32–34 डिग्री सेल्सियस; भावर तराई क्षेत्र का पूर्वी भाग, मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तर पश्चिमी भाग, दक्षिणी–पश्चिमी अर्ध शुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 34–36 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 36–38 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- 13 से 15 अप्रैल, 2024 के दौरान प्रदेश में कई स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा तथा 14 अप्रैल, 2024 को आगरा, सहारनपुर, मेरठ, झांसी तथा मुरादाबाद मण्डल में कहीं–कहीं ओलावृष्टि होने की संभावना है, जिसके कारण अधिकतम तापमान में औसतन 3 से 5 डिग्री सेल्सियस की गिरावट होने की संभावना है। अतः किसान भाईयों को रबी की तैयार फसलों की कटाई कर सुरक्षित स्थान पर भण्डारण करने की सलाह दी जाती है।
- किसान भाई रबी फसलों की कटाई–मड़ाई के उपरांत भण्डारण से पूर्व अनाज को अच्छी तरह से सुखा लें, जिससे नमी की मात्रा 10 प्रतिशत से अधिक न हो इसके लिये किसान भाई दानों को दांतों के नीचे दबाने से कट की आवाज आने पर इसे भण्डारण करने योग्य समझें।
- भण्डारण गृह के दीवारों एवं फर्श आदि पर मैलाथियान 50 प्रतिशत ई.सी. को 1:100 के अनुपात में पानी में घोलकर 3 लीटर प्रति 100 वर्ग मीटर की दर से छिड़काव करें तथा बोरों को घोल में 10 से 15 मिनट डुबोने के उपरांत सुखाकर शोधित कर लें।
- रबी फसलों की कटाई के उपरान्त खाली खेतों की गहरी जुताई करें।
- उत्तर प्रदेश शासन के निर्देश के क्रम में फसल अवशेषों को जलाना प्रतिबन्धित कर दिया गया है साथ ही साथ कम्बाइन हार्वेस्टिंग मशीन स्ट्रा रीपर विद बाइन्डर अनिवार्य कर दिया गया है। उक्त के दृष्टिगत किसान फसल अवशेषों को खेतों में न जलाएं।
- कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा सहभागी फसल निगरानी एवं निदान प्रणाली (पी.सी.एस.आर.एस.) कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत कृषकों हेतु आवंटित दो मोबाईल नं. यथा 9452247111 एवं 9452257111 पर अपना नाम पता के साथ फसल संबंधी कीट रोग संबंधी समस्या की फोटो खींचकर भेज सकते है। इसका निदान विभागीय अधिकारियों द्वारा 48 घंटों की समयावधि में किया जाता है।

जायद फसलों की खेती

- उर्द/मूँग में बालदार सूड़ी के जैविक नियंत्रण हेतु बैसिलस थ्युरेंजेंसिस (बी.टी.) 1 कि.ग्रा. अथवा एजाडिरेक्टिन 0.15 प्रतिशत ई.सी. 2.5 लीटर प्रति हे. की दर से 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। रासायनिक नियंत्रण हेतु फलुबेंडीएमाइड 20 प्रतिशत डब्लू. जी. 300 ग्रा. अथवा क्यूनॉलफॉस 25 प्रतिशत ई. सी. 1.5 ली. प्रति हेक्टेयर की दर से 600–700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।
- उर्द/मूँग की फसल में पीला चित्रवर्ण (मोजैक) रोग दिखाई देते ही प्रभावित पौधे सावधानीपूर्वक उखाड़ कर नष्ट (जला दे/गाड़ दें) कर दें। 5 से 10 पौढ़ मक्खी (सफेद मक्खी) प्रति पौध की दर से दिखाई पड़ने पर आक्सीडेमेटॉन–मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. या डाइमेथोयेट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 ली. पानी मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।
- मूँग/उर्द में पहली सिंचाई बुआई के 30–35 दिन के बाद आवश्यकतानुसार सिंचाई करें इससे पूर्व सिंचाई करने पर जड़ों में नत्रजन स्थिरीकरण ग्रन्थियों का विकास ठीक से नहीं होता है।
- सूरजमुखी में आवश्यकतानुसार हल्की नमी बनाये रखें।
- सूरजमुखी एक परपरागित फसल है इसमें कृत्रिम परसेंचन क्रिया परम आवश्यक है। सूरजमुखी में अच्छी तरह फूल आ जाने पर हाथ में दस्ताने पहनकर या किसी मुलायम रोयेंदार कपड़े को लेकर सूरजमुखी

के मुंडकों पर चारो ओर धीरे से घुमा दें। पहले फूल के किनारे वाले भाग पर, फिर बीच के भाग पर यह क्रिया प्रातःकाल 7:30 बजे तक करनी चाहिए। यह क्रिया एक दिन के अंतराल पर सप्ताह में कम से कम तीन बार करें।

गेहूँ की खेती

- मड़ाई के उपरान्त गेहूँ को धूप में सूखाकर ही (दांत से काटने पर कट से आवाज आने पर) भण्डारण करें जिससे भण्डारण में होने वाली हानि से बचा जा सकें।
- अनाज को धातु की बनी बखारियों अथवा कोठिलों, बोरियों या कमरें में जैसी सुविधा हो भण्डारण करें। भण्डारण के लिए धातु की बनी बखारी बहुत ही उपयुक्त है। भण्डारण के पूर्व कोठिलों तथा कमरे को साफ कर लें और दीवालों तथा फर्श पर मैलाथियान 50 प्रतिशत के घोल (1:100) को 3 लीटर प्रति 100 वर्ग मीटर की दर से छिड़काव के बाद सूखने के उपरान्त भण्डारण करें। बखारी के ढक्कन पर पालीथीन लगाकर मिट्टी का लेप कर दें जिससे वायुरोधी हो जायें।

गन्ना की खेती

- पेड़ी प्रबंधन हेतु रेटून मैनेजमेंट डिवाइस द्वारा ठूठों की छटाई के बाद सिंचाई कर दें। तत्पश्चात पर्याप्त नमी की दशा में उर्वरकों का प्रयोग करें।
- शरदकालीन बावग गन्ने में अन्तःफसल की कटाई/खुदाई के पश्चात फसल अवशेष मृदा में मिला दें तथा सिंचाई पश्चात 130 किग्रा. यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से गन्ने की लाइनों में टॉप ड्रेसिंग कर दें।
- गन्ने की पत्तियों पर अंकुर बेधक एवं चोटी बेधक कीट के अंडे दिखने पर पत्ती को तोड़कर नष्ट कर दें जिससे कीट के आगे की पीढ़ी समाप्त हो जाय।
- गन्ने के जिस खेत में लालसड़न रोग का प्रकोप हो, उसमें कम से कम एक वर्ष तक गन्ने की फसल न करें।
- बसंत के प्रारंभ में बोये गये गन्ने की गुड़ाई करें।

सब्जियों की खेती

- रबी मौसम में बोई गयी लहसुन एवं प्याज की फसल पक गयी होगी, उसकी खुदाई करें। खुदाई से 12–15 दिन पहले सिंचाई बन्द कर दें।
- फरवरी/मार्च माह में बोई गई कद्दूवर्गीय फसलों में यदि हरा तेला, तना व फलीछेदक दिखाई दे तो डाईमेथोएट 2 मिली./ली. पानी या इमिडाक्लोप्रिड 1 मिली./ली. पानी की दर से छिड़काव करें।
- सब्जियों की फसल में विशेषतया टमाटर, मिर्च में विषाणु रोग का प्रकोप अधिक होता है। इस रोग का प्रसार वाहक कीट सफेद मक्खी/हापर कीट के द्वारा होता है। इसके प्रसार की रोकथाम हेतु आवश्यकतानुसार डाईमिथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- टमाटर की फलवेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु इन्डाक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत एस.सी. 1 मि.ली. प्रति लीटर की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- अदरक व हल्दी के खेतों की तैयारी करें।

बागवानी

- आम तथा लीची के बागों में आवश्यकतानुसार नमी बनाये रखें।
- आम के भुनुगा कीट की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी एवं प्रोफेनोफास 50 प्रतिशत ई.सी. 1 मिली0/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आम के फलों को गिरने से बचाने के लिए नैप्थलीन एसिटिक एसिड (एन.ए.ए.) 20 पी.पी.एम. (90 मिली/200 लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- लीची के फल को फ्रूट क्रैकिंग से बचाने के लिये शाम के समय निश्चित अंतराल पर सिंचाई करते रहे तथा कैल्शियम नाईट्रेट 1.0 प्रतिशत, बोरेक्स 0.8 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

पशुपालन

- वर्तमान में ब्रुसेला एवं एफ.एम.डी. का निशुल्क टीकाकरण चल रहा है। जो 30 अप्रैल तक चलेगा। 15 मई से एच.एस. का टीकाकरण प्रारंभ होगा।
- मुर्गियों के आहार में विटामिन सी, सेलेनियम, एंटीआक्सीडेंट की मात्रा बढ़ा देनी चाहिये। गर्मी में अंडो को 26 डिग्री सेन्टीग्रेट के तापमान पर रखना चाहिये। अन्यथा वे खराब हो जाते है। उनका पीला भाग लाल हो जाता है एवं आकार भी घर जाता है।

- ज्वार की फसल में यदि सिंचाई नहीं हुई है तो सूखे की स्थिति में पशुओं को चारा न खिलायें।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वारा पर पशु चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु पशुपालक टोल फ्री हैल्पलाइन नं. 1962 पर सम्पर्क करें।

मत्स्य पालन

- वर्तमान में अधिक तापमान के दृष्टिगत मत्स्य पालन तालाबों में 5.5–6 फुट तक पानी बनाये रखें।
- कामन कार्प मछलियों के प्रजनन के दृष्टिगत प्रजनकों (ब्रूडर) को पृथककरण उपरांत उनका विशेष पोषण सुनिश्चित किया जाय।
- वर्तमान में कॉमन कार्प मछलियों के प्रजनन हेतु उपयुक्त समय है, अतः कॉमन कार्प मछलियों का प्रजनन कराया जा सकता है।
- मछलियों को निश्चित समय पर ही भोजन दिया जाय।

रेशम पालन

- शहतूत उद्यान में चाकी कीट पालन से पूर्व आवश्यकतानुसार सिंचाई सुनिश्चित की जाय।
- पत्ती संरक्षण अवधि कम रखी जाय। पत्ती तोड़ने का कार्य सुबह शाम ठंडे समय में करें।

वानिकी

- आवश्यकतानुसार पौधों की सिंचाई करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 25 अप्रैल, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

12-4-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
17. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।

18. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
19. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
20. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
21. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
22. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
23. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
24. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
25. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
26. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
28. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
29. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
30. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
31. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
32. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
33. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
34. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
35. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
36. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
37. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
40. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
41. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
42. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
43. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
44. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
45. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
46. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

12-4-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की द्वितीय बैठक दिनांक 12 अप्रैल, 2024 की उपस्थिति

1. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
2. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ
3. डा. अनूप कुमार दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ
4. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या
5. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
6. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ
7. श्री ए.के. बिश्नोई, संयुक्त कृषि निदेशक, धान्य फसलें, कृषि विभाग, उ.प्र.।
8. डा. राजीव कुमार वर्मा, संयुक्त निदेशक शाकभाजी, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ
9. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र, पशुपालन, उत्तर प्रदेश (ऑनलाइन)।
10. श्री सत्येन्द्र यादव, वरिष्ठ मत्स्य निरीक्षक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश
11. श्री ओमकार सिंह त्यागी, प्रबंधक कृषि, सी.एस.सी.ई गवर्नेस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड, विजय खण्ड गोमती नगर लखनऊ।
12. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ।
13. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आवजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
14. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल ऑफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना, नैनी एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट, शुआट्स, प्रयागराज (ऑनलाइन)।
15. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
16. डा. अनसुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।